Article - 5

एडवर्ड सईद : उत्तर–औपनिवेशिक विमर्श के गांधी

हंस

नवंबर, 2003

"एडवर्ड सईद यह समझने में हमारी मदद करते हें कि हम कौन हैं? और किसी भी तरह की सत्ता–लोलुपता का गुलाम होने की बजाय, जीवन तथा समाज में नैतिक व्यक्तित्व के रूप में सक्रिय भूमिका निभाने के लिये हमें क्या–क्या करना चाहिये?" – नॉम चोम्स्की

सईद का सबसे बड़ा योगदान तीसरी दुनिया ही नहीं, स्वयं पश्चिम के सिविल–समाजों में भी उनके खुद के राष्ट्र–राज्यों की अनैतिक नीतियों के खिलाफ जनमत तैयार करना रहा है।, अभी कान्कुन में विश्व–व्यापार संगठन की बैठक में किसानों को लेकर पश्चिमी सब्सिडी (अनुदानों) की नीतियों के खिलाफ तीसरी दुनिया

के मोर्चे 'जी–21' का सबसे जोरदार समर्थन, प्रथम विश्व के सिविल–समाज के गैर–सरकारी संगठनों तथा आंदोलनों ने किया।

एडवर्ड सईद (1935–2003) हमारे बीच नहीं रहे लेकिन तीसरी दुनिया को 'तीसरी नजर' देने के योगदान के यप में वे और उनका कृतित्वहमेशा हमारे बीच जिंदा रहेगा। आधुनिक युग के प्रारंभ से ही,औपनिवेशिकरण की प्रक्रिया के तहत, पश्चिम ने पूर्वी उपनिवेशों को अपने साम्राज्यवादी नजरिए से देखा। जैसे इन भूखंडों में, हजारों–हजार साल से पनपी विकसित सभ्यतायें–संस्कृतियां मानव सभ्यता का अंग नहीं बल्कि कोई 'अजूबा' हो, मुट्ठी भर पश्चिमी लोगों ने उन्नीसवीं–बीसवीं शताब्दी में करीब–करीब पूरे अफ्रीका, एशिया तथा लातीन अमेरिका के देशों पर आधिपत्य स्थापित कर लिया था। बीसवीं शताब्दी मे चले राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों ने पश्चिमी देशों द्वारा किये जा रहे आर्थिक शोषण का खुलकर विरोध किया तथा औपनिवेशिकरण की पूरी प्रक्रिया को अनैतिक तथा अमानवीय साबित कर दिया। फ्रैंज फेनो ने पुस्तक 'द रेचेड आफ द अर्थ' में फ्रांस द्वारा अल्जीरिया के लोगों पर किये जा रहे आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक उत्पीड़न का जबरदस्त खुलासा किया। ज्यॉ पाल सार्त्र ने इस पुस्तक की भूमिका में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्वीकारोक्ति की है कि 'प्रथम विश्व के पश्चिमी देश, तीसरी दुनिया के उत्पीड़न–शोषण से निर्मित–विकसित हुए हैं। जबकि हम लगातार किए जा रहे साम्राज्यवादी दावों से ऊब चुके हैं कि औपनिवेशिक युग में ही नहीं उत्तर औपनिवेशिक युग में भी तीसरी दुनिया में हुई हर प्रगति विकास का श्रेय पश्चिमी देशों को दिया जाना चाहिये।

फ्रैंज फेनो के इसी नजरिए को एडवर्ड सईद ने विस्तार से अपनी पुस्तको ओरिएटलिज्म, कल्चर एंड एम्पीरियलिज्म व रिफ्लेक्शन्स आन एक्जाइल, अपनी जीवनी आउट ऑफ प्लेस तथा अन्य लेखों–व्याख्यानों में आगे बढ़ाया है। संस्कृति एवं साम्राज्यवाद पुस्तक में तो उन्होंने फ्रैंज फेनों को विस्तार से उद्धृत किया है। सईद का सबसे बड़ा योगदान, साहित्य–संस्कृति के विखंडन द्वारा सामाजिक–राजनैतिक सत्ता संरचना को नंगा करना है, जोसेफ कोनार्ड के उपन्यास से शुरू कर उन्होंने अनेक पश्चिमी उपन्यासों के चरित्र के विश्लेषण से यह दर्शाया है कि पश्चिम के लेखकों का 'तीसरी दुनिया के लोगों के बारे में 'हम और अन्य' का विभेदीकरण ही 'पुरबिया–विमर्श' के मूल में है। दरअसल यह मान्यता पश्चिम के अतिरिक्त, दुनिया के अन्य भूभागों में रहने वाले लोगों के असभ्य, जंगली होने के पुरातन ग्रीक विचारों से उत्पन्न हुई है। हम 'हम' है वे 'वे' हैं। वे कौन हैं, इसका खुलासा करके ही उनहें अपनी अस्मिता या अपने होने की स्थिति स्पष्ट लगती है। यानी हम गोरे हैं, वे काले हैं, हम विकसित हैं, वे अविकसित हैं, हम सभ्य हैं, वे असभ्य हैं इत्यादि। इसी को सईद ने 'ओरिएंटलिज्म' (पूरबिया विमर्श अाविा पूरबवाद) कहा है जिसके तहत पश्चिम ने पूर्व को, न केवल सैन्य तथा राजनैतिक रूप से परिभाषित शासित किया, वरन् भौगोलिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप से भी पूर्व के लोगों को उनकी वास्तविक अस्मिता के स्थान पर अलग 'पुरबिया' पहचान दी। साम्राज्यवाद को जायज ठहराने के लिये, पश्चिम को, अपने विपरीत 'अन्य' को निर्मित करनी पड़ी। यहीं से पूरब के लोगों के बारे में, रूढ़िगत अन्य

का आख्यान अलापा जाने लगा, जो आज भूमंडलीकरण के युग में भी बदस्तूर जारी है।

एडवर्ड सईद ने जिस बारीकी से पश्चिम के इस 'पुरबिया पूर्वाग्रह' को पकड़ा तथा अनावृत्त किया, उसने 1978 से उनकी पुस्तक 'ओरिएंटलिज्म' के प्रकाशन से लेकर आज तक पश्चिम के अकादमिक जगत में तूफान खड़ा कर रखा है। नतीजन पश्चिम के कमोबेश हर विश्वविद्यालय में उनके इस दृष्टिकोण से कि तीसरी दुनिया के लोग पश्चिम को कैस देखते–समझते हैं। प्रेरित होकर अध्ययन–विश्लेषण करने के लिये पूरी 'पोस्ट–कालोनियल स्टडीज' के नाम पर एक नई ज्ञान–शाखा शुरू हो गयी। उनकी स्थापनाओं के प्रतिवाद में कई पुस्तकें लिखी जा रही हैं। कूपर तथा स्टोलर ने पुस्तक 'टेंशन्स ऑफ एम्पायर' में पश्चिम के पुरबिया पूर्वाग्रह को मानते हुए भी यह दर्शाने की कोशिश की है कि औपनिवेशिक देशों के लिये भी उपनिवेश बनाये रखना कोई आसान काम नहीं था, बल्कि भारी टेंशन या सिरदर्द का काम था। इसी तरह की तमाम पुस्तकों के माध्यम से सईद की बातों को काटने का प्रयास तीव्र होता गया है। इज़राइल के एक बुद्धिजीवी ने सईद के ऊपर तीन वर्ष शोध के पश्चात् उनके बचपन इत्यादि के संघर्षों को मिथ्या साबित करने की कोशिश की है। विरोधियों की ऐसी प्रतिक्रियायें, सईद की बातों को काटती भले ही हों, ध्वस्त नहीं कर पाई हैं।

-X-X-X-